

भारत का राजपत्र The Gazette of India

प्रसाधारण

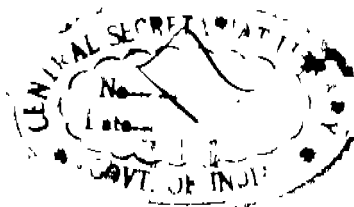
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उपखण्ड (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्रधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY



सं० 98]

नई दिल्ली, सोमवार, मार्च 1, 1976/फाल्गुन 11, 1897

No. 98]

NEW DELHI, MONDAY, MARCH 1, 1976/PHALGUNA 11, 1897

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

CENTRAL BOARD OF DIRECT TAXES

NOTIFICATION

WEALTH-TAX

New Delhi, the 1st March 1976

S.O. 147(E).—In exercise of the powers conferred by section 46 of the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957), the Central Board of Direct Taxes hereby makes the following rules further to amend the Wealth-tax Rules, 1957, namely:—

1. (1) These rules may be called the Wealth-tax (Amendment) Rules, 1976.
- (2) They shall come into force on the 1st day of April, 1976.
2. In the Wealth-tax Rules, 1957, in Form A,—
 - (a) in Part III, for item 3, the following item shall be substituted, namely:—

“3. Value of assets (including value of gift of money made by means of book entries), as per Annexure XV, which is to be included in the net wealth of the assessee under section 4(1)(a) or 4(1A) or 4(5A).”;
 - (b) Part V shall be re-numbered as Part VI and before Part VI as so re-numbered, the following Part shall be inserted, namely:—

“PART V

Statement of tax paid on sale assessment (See Note)

Date of Payment

Amount

NOTE: If any tax is payable on the basis of this return, after taking into account the amount of tax, if any, already paid under any provision of the Wealth-tax Act, 1957, such tax must be paid before furnishing this return and the return should be accompanied by proof of such payment—sec. 15B.”;

- (c) below the VERIFICATION, for the words and figures “Any person making a false statement in this return shall be liable to prosecution under section 36 of the Wealth-tax Act, 1957, and on conviction be punishable with rigorous imprisonment which shall not ordinarily be less than six months and may extend to two years”, the following shall be substituted, namely:—

“(Any person making a false statement in this return shall be liable to prosecution under section 35D of the Wealth-tax Act, 1957, and on conviction be punishable,—

- (i) in a case where the tax sought to be evaded exceeds one lakh rupees, with rigorous imprisonment for a term which shall not be less than six months but which may extend to seven years and with fine;

- (ii) in any other case, with rigorous imprisonment for a term which shall not be less than three months but which may extend to three years and with fine.”;

(d) in Annexure VI, in item 9, the word “held” shall be omitted ;

(e) for Annexure XV, the following Annexure shall be substituted, namely:—

“ANNEXURE XV

“(See section G of Part III of this return)

Statement of ‘Transferred Assets’, ‘Converted Property’ and ‘Gift of Money by means of Book Entries’—vide Section 4(1)(a), 4(1A) and 4(5A) (See Note)

Description of assets/gifts	Date of transfer/gift	Name of transferee/ donee	Value Rs.
1. ‘Transferred assets’ includible in net wealth—vide sec. 4 (1)(a).			
2. ‘Converted property’ includible in net wealth—vide sec. 4 (1A).			
3. ‘Gift of money by means of book entries’—vide sec. 4(5A).			
	TOTAL Rs. _____		
Deduct: Debts referable to such assets/gift			Rs. _____
Balance taken to Section G (Item 3) of Part III of this return			Rs. _____”.

[No. 1248/F.No. 143(1)176-T.P.L.]

O. P. BHARDWAJ,

Secretary, Central Board of Direct Taxes.

केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड

अधिसूचना

धन-कर

नई दिल्ली, 1 मार्च, 1976

का०आ० 147 (अ).—धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) की धारा 46 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड धन-कर नियम, 1957 में श्रीर संशोधन करने के लिए निम्नलिखित नियम बनाता है, अर्थात्:—

1. (1) इन नियमों का नाम धनकर (संशोधन) नियम, 1976 है।

(2) ये 1 अप्रैल, 1976 को प्रवृत्त होंगे।

2. धन-कर नियम, 1957 में, प्ररूप 'क' में,—

(क) भाग, 3 में, मव 3 के स्थान पर, निम्नलिखित भद रखी जाएगी, अर्थात्:—

“3 उगबन्ध 15 के अनुसार, आस्तियों का मूल्य (जिसके अन्तर्गत लेखा-पुस्तकों में प्रविष्टियों के माध्यम से किए गए धन के दान का मूल्य भी आता है), जिसे धारा 4 (1) (क) या 4 (1क) या 4 (5क) के अधीन निर्धारित के शुद्ध धन में सम्मिलित किया जाता है।” ;

(ख) भाग 5 को भाग 6 के रूप में पुनः संख्यांकित किया जाएगा और इस प्रकार पुनः संख्यांकित भाग 6 के पूर्व, निम्नलिखित भाग, अन्तःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

“भाग 5

स्वतः निर्धारण पर संदत्त कर का विवरण (टिप्पण देखिए)

संदाय की तारीख

रकम

टिप्पण.—यदि धनकर अधिनियम, 1957 के किसी उपबन्ध के अधीन पहल ही संदत्त कर की रकम को, यदि कोई हो, गणना में लेने के पश्चात् इस विवरणी के आधार पर कोई कर संदेय है, तो ऐसा कर हम विवरणी के प्रस्तुत किए जाने से पूर्व अवश्य संदत्त किया जाना चाहिए और विवरणी के साथ ऐसे संदाय का सबूत भी होना चाहिए—धारा 15 ख ” ;

(ग) सत्यापन के नीचे, “कोई व्यक्ति इस विवरणी में मिथ्या कथन करेगा, उसके विरुद्ध धनकर अधिनियम, 1957 की धारा 36 के अधीन अभियोजन संस्थित किया जा सकेगा, और वह दोषसिद्ध पर कठिन कारावास से, जो मामूली तौर पर छह मास से कम नहीं होगा और जो दो वर्ष तक का हो सकेगा, दण्डनीय होगा ” शब्दों और अंकों के स्थान पर निम्नलिखित रखा जाएगा अर्थात्:—

“(जो व्यक्ति इस विवरणी में मिथ्या कथन करेगा, उसके विरुद्ध धनकर अधिनियम, 1957 की धारा 35 घ के अधीन अभियोजन संस्थित किया जा सकेगा, और वह दोषसिद्ध पर, —

(i) एक लाख रुपये से अधिक के कर के आशयित अपबन्धन के मामले में, ऐसी अवधि के लिए कठिन कारावास से, जो छह मास से कम की नहीं होगी किन्तु जो सात वर्ष तक की हो सकेगी, और जुर्माने से ;

(ii) किसी अन्य मामले में, ऐसी अवधि के लिए कठिन कारावास से, जो तीन वर्ष से कम की नहीं होगी, किन्तु जो तीन वर्ष तक की हो सकेगी, और जुमाने से, दण्डनीय होगा।”;

(घ) उपाबन्ध 6 में, मद 9 में से “धारित” शब्द का लोप किया जाएगा।

(ङ) उपाबन्ध 15 के स्थान पर, निम्नलिखित उपाबन्ध रखा जाएगा, अर्थात् :—

“ उपाबन्ध 15

(इस विवरणी के भाग 3 का अनुभाग “छ” देखिए)

“अन्तरित आस्तियों”, “संपरिवर्तित सम्पत्ति” और लेखा पुस्तकों में प्रविष्टियों के माध्यम से ‘धन का दान’—(4) (1) (क), 4(1क) और 4(5क) देखिए (टिप्पण देखिए)

आस्तियों/दानों का वर्णन	अन्तरण/दान की तारीख	अन्तरित/आदाता का नाम	मूल्य रु०
1 “अन्तरित आस्तियों”, जो शुद्ध धन में सम्मिलित की जाने योग्य हैं— धारा 4 (1) (क) देखिए			
2 ‘संपरिवर्तित सम्पत्ति’, जो शुद्ध धन में सम्मिलित करने योग्य हैं— धारा 4 (1क) देखिए			
3 लेखा पुस्तकों में प्रविष्टियों के माध्यम से धन का दान—धारा 4 (5क) देखिए			
योग			रु०

घटाइये:— ऐसी आस्तियों/दान के प्रतिनिर्देश्य ऋण..... रु०

इस विवरणी के भाग III के अनुभाग ‘छ’ (मद 3) में ले जाया गया अतिशेष..... रु०

[सं० 1248/फा० सं० 143 (1)/76—टी० पी० एल०]

ओ० पी० भारद्वाज,
सचिव, केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड।